Pro

Chapter 24

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

אִתָּם׃	לִהְיֹות	)תִּתְאָיו(	]תתאו[	וְאַל־	רָעָה	בְּאַנְשֵׁי	תְּקַנֵּא	אַל־
उनके-साथ	होने-के-लिए	(लालच-कर)	[लालच-कर]	और-मत-	बुराई-के	मनुष्यों-से-	ईर्ष्या-कर	मत-
H0854	H1961	H0183	H0183	H0408		H0376	H7065	H0408

दुष्ट जन से तू कभी मत होड़कर। उनकी संगत की तू चाहत मत कर।

2

תְּדַבֵּרְנָה׃	שִׂפְתֵיהֶם	וְעָמָל	לִבָּם	יֶהְגֶּה	שֹׁד	כִּי־
बोलते-हैं	होंठ-उनके	और-कष्ट	हृदय-उनका	सोचता-है	विनाश	क्योंकि-
H1696	H8193	H5999		H1897	H7701	

क्योंकि उनके मन हिंसा की योजनाएँ रचते और उनके होंठ दुःख देने की बातें करते हैं।

3

יִתְכֹּונָן׃	וּבִתְבוּנָה	בָּיִת	יִבָּנֶה	בְּחָכְמָה
स्थिर-होता-है	और-समझ-से	घर	बनता-है	बुद्धि-से
	H8394		H1129	H2451

बुद्धि से घर का निर्माण हो जाता है, और समझ—बूझ से ही वह स्थिर रहता है।

4

וְנָעִים׃	יָקָר	הֹון	כָּל־	יִמָּלְאוּ	חֲדָרִים	וּבְדַעַת
और-मनोहर	बहुमूल्य	धन	सब-	भरते-हैं	कमरे	और-ज्ञान-से
	H3368	H1952	H3605	H4390	H2315	H1847

ज्ञान के द्वारा उसके कक्ष अद्भुत और सुन्दर खजानों से भर जाते हैं।

5

כֹּחַ׃	מְאַמֶּץ־	דַּעַת	וְאִישׁ־	בַּעֹוז	חָכָם	גֶּבֶר־
शक्ति	दृढ़-करता-है-	ज्ञान-का	और-मनुष्य-	बल-में	बुद्धिमान	पुरुष-
	H0553	H1847	H0376	H5797	H2450	H1397

बुद्धिमान जन में महाशक्ति होती है और ज्ञानी पुरुष शक्ति को बढ़ाता है।

6

יֹועֵץ׃	בְּרֹב	וּתְשׁוּעָה	מִלְחָמָה	לְךָ	תַּעֲשֶׂה־	בְתַחְבֻּלֹות	כִּי
सलाहकारों-की	बहुताई-में	और-उद्धार	युद्ध	तेरे-लिए	करेगा-	चतुराई-से	क्योंकि
H3289	H7230	H8668	H4421			H8458	

युद्ध लड़ने के लिये परामर्श चाहिये और विजय पाने को बहुत से सलाहकार।

7

פִּיהוּ׃	יִפְתַּח־	לֹא	בַּשַּׁעַר	חָכְמֹות	לֶאֱוִיל	רָאמֹות
मुख-अपना	खोलता-है-	नहीं	फाटक-में	बुद्धि	मूर्ख-के-लिए	ऊंची
H6310		H3808	H8179	H2454	H0191	

मूर्ख बुद्धि को नहीं समझता। लोग जब महत्वपूर्ण बातों की चर्चा करते हैं तो मूर्ख समझ नहीं पाता।

8

יִקְרָאוּ׃	מְזִמֹּות	בַּעַל־	לֹו	לְהָרֵעַ	מְחַשֵּׁב
पुकारते-हैं	चालों-का	स्वामी-	उसे	बुराई-करने	सोचनेवाला
H7121	H4209	H1167			H2803

षड्यन्त्रकारी वही कहलाता है, जो बुरी योजनाएँ बनाता रहता है।

9

לֵץ׃	לְאָדָם	וְתֹועֲבַת	חַטָּאת	אִוֶּלֶת	זִמַּת
ठट्ठा	मनुष्य-के-लिए	और-घृणा	पाप	मूर्खता-की	योजना
H3887	H0120	H8441		H0200	H2154

मूर्ख की योजनायें पाप बन जाती है और निन्दक जन को लोग छोड़ जाते हैं।

10

הִתְרַפִּיתָ	בְּי֣וֹם	צָרָ֗ה	צַ֣ר	כֹּחֶֽכָה׃
शिथिल-हुआ	दिन-में	संकट-के	तंग	बल-तेरा
H7503	H3117			

> यदि तू विपत्ति में हिम्मत छोड़ बैठेगा, तो तेरी शक्ति कितनी थोड़ी सी है।

11

הַ֭צֵּל	לְקֻחִ֣ים	לַמָּ֑וֶת	וּמָטִ֥ים	לַ֝הֶ֗רֶג	אִם־	תַּחְשֽׂוֹךְ׃
छुड़ा	ले-जानेवालों-को	मृत्यु-की-ओर	और-लड़खड़ातों-को	वध-की-ओर	यदि-	रोकेगा
H5337	H3947	H4194	H4131	H2027		H2820

> यदि किसी की हत्या का कोई षड्यन्त्र रचे तो उसको बचाने का तुझे यत्न करना चाहिये।

12

כִּֽי־	תֹאמַ֗ר	הֵן֮	לֹא־	יָדַ֪עְנ֫וּ	זֶ֥ה	הֲלֹא־	תֹ֘כֵ֤ן	לִבּ֨וֹת׀	הֽוּא־	יָבִ֗ין
क्योंकि-	कहेगा	देखो	नहीं-	जानते-थे-हम	यह	क्या-नहीं-	जांचनेवाला	हृदयों-को	वह-	समझेगा
	H0559	H2005	H3808	H3045	H2088	H3808	H8505	H3826	H1931	H0995

וְנֹצֵ֣ר	נַ֭פְשְׁךָ	ה֣וּא	יֵדָ֑ע	וְהֵשִׁ֖יב	לְאָדָ֣ם	כְּפָעֳלֽוֹ׃
और-रखनेवाला	प्राण-तेरे	वह	जानता-है	और-लौटाएगा	मनुष्य-को	कार्य-उसके-अनुसार
H5341	H5315	H1931	H3045	H7725	H0120	H6467

> तू ऐसा नहीं कह सकता, “मुझे इससे क्या लेना।” यहोवा जानता है सब कुछ और यह भी वह जानता है किस लिये तू काम करता है यहोवा तुझको देखता रहता है। तेरे भीतर की जानता है और वह तुझको यहोवा तेरे कर्मो का प्रतिदान देगा।

13

אֱכָל־	בְּנִ֣י	דְ֭בַשׁ	כִּי־	ט֑וֹב	וְנֹ֥פֶת	מָ֝ת֗וֹק	עַל־	חִכֶּֽךָ׃
खा-	पुत्र-मेरे	शहद	क्योंकि-	अच्छा	और-छत्ता	मीठा	पर-	तालू-तेरे
H0398		H1706			H5317	H4966		H2441

> हे मेरे पुत्र, तू शहद खाया कर क्योंकि यह उत्तम है। यह तुझे मीठा लगेगा।

14

כֵּ֤ן׀	דְּעֶ֣ה	חָכְמָה	לְנַ֫פְשֶׁ֥ךָ	אִם־	מָ֭צָאתָ	וְיֵ֣שׁ	אַחֲרִ֑ית	וְ֝תִקְוָתְךָ֗	לֹ֣א	תִכָּרֵֽת׃	פ
वैसे-	जान	बुद्धि	प्राण-तेरे-के-लिए	यदि-	पाएगा	और-है	भविष्य	और-आशा-तेरी	नहीं	काटी-जाएगी	प
	H3045	H2451	H5315		H4672	H3426	H0319		H3808	H3772	

> इसी तरह यह भी तू जान ले कि आत्मा को तेरी बुद्धि मीठी लगेगी, यदि तू इसे प्राप्त करे तो उसमें निहित है तेरी भविष्य की आशा और वह तेरी आशा कभी भंग नहीं होगी।

15

אַל־	תֶּאֱרֹ֣ב	רָ֭שָׁע	לִנְוֵ֣ה	צַדִּ֑יק	אַל־	תְּשַׁדֵּ֥ד	רִבְצֽוֹ׃
मत-	घात-में-लग	दुष्ट	निवास-पर	धर्मी-के	मत-	उजाड़	शयन-उसका
H0408	H0693	H7563		H6662	H0408	H7703	H7258

> धर्मी मनुष्य के घर के विरोध में लुटेरे के समान घात में मत बैठ और उसके निवास पर मत छापा मार।

16

כִּ֤י	שֶׁ֨בַע׀	יִפּ֣וֹל	צַדִּ֣יק	וָקָ֑ם	וּ֝רְשָׁעִ֗ים	יִכָּשְׁל֥וּ	בְרָעָֽה׃
क्योंकि	सात	गिरता-है	धर्मी	और-उठता-है	परंतु-दुष्ट	ठोकर-खाते-हैं	बुराई-में
	H7651	H5307	H6662		H7563	H3782	

> क्योंकि एक नेक चाहे सात बार गिरे, फिर भी उठ बैठेगा। किन्तु दुष्ट जन विपत्ति में डूब जाता है।

17

בִּנְפֹ֣ל	[אויביך]	(אֽ֭וֹיִבְךָ)	אַל־	תִּשְׂמָ֑ח	וּ֝בִכָּשְׁל֗וֹ	אַל־	יָגֵ֥ל	לִבֶּֽךָ׃
गिरने-पर	[शत्रुओं-तेरे]	(शत्रु-तेरे-के)	मत-	आनंदित-हो	और-ठोकर-खाने-पर-उसके	मत-	उल्लसित-हो	हृदय-तेरा
H5307	H0341	H0341	H0408	H8055	H3782	H0408	H1523	

> शत्रु के पतन पर आनन्द मत कर। जब उसे ठोकर लगे, तो अपना मन प्रसन्न मत होने दे।

18

פֶּן־	יִרְאֶ֣ה	יְ֭הוָה	וְרַ֣ע	בְּעֵינָ֑יו	וְהֵשִׁ֖יב	מֵעָלָ֣יו	אַפּֽוֹ׃
नहीं-तो-	देखेगा	यहोवा	और-बुरा	आंखों-अपनी-में	और-मोड़ेगा	उस-से	क्रोध-अपना
H6435	H7200	H3068			H7725		H0639

यदि तू ऐसा करेगा, तो यहोवा देखेगा और वह यहोवा की आँखों में आ जायेगा एवं वह तुझसे प्रसन्न नहीं रहेगा। फिर सम्भव है कि वह तेरे उस शत्रु की ही सहायता करे।

19

אַל־	תִּתְחַר	בַּמְּרֵעִים	אַל־	תְּקַנֵּא	בָּרְשָׁעִים׃
मत–	जल–	बुराई-करनेवालों-पर	मत–	ईर्ष्या-कर	दुष्टों-से
H0408	H2734		H0408	H7065	H7563

तू दुर्जनों के साथ कभी ईर्ष्या मत रख, कहीं तुझे उनके संग विवाद न करना पड़ जाये।

20

כִּי	לֹא־	תִהְיֶה	אַחֲרִית	לָרָע	נֵר	רְשָׁעִים	יִדְעָךְ׃
क्योंकि	नहीं–	होगा	भविष्य	बुरे-के-लिए	दीपक	दुष्टों-का	बुझ-जाएगा
	H3808	H1961	H0319			H7563	H1846

क्योंकि दुष्ट जन का कोई भविष्य नहीं है। दुष्ट जन का दीप बुझा दिया जायेगा।

21

יְרָא־	אֶת־	יְהוָה	בְּנִי	וָמֶלֶךְ	עִם־	שׁוֹנִים	אַל־	תִּתְעָרָב׃
भय-कर–	–	यहोवा-का	पुत्र-मेरे	और-राजा-का	साथ–	बदलनेवालों-के	मत–	मिल
H3372	H0853	H3068		H4428			H0408	H6148

हे मेरे पुत्र, यहोवा का भय मान और विद्रोहियों के साथ कभी मत मिल।

22

כִּי־	פִתְאֹם	יָקוּם	אֵידָם	וּפִיד	שְׁנֵיהֶם	מִי	יוֹדֵעַ׃	ס
क्योंकि-	अचानक	उठेगी	विपत्ति-उनकी	और-विनाश	दोनों-का	कौन	जानता-है	स
	H6597		H0343	H6365	H8147	H4310	H3045	

क्योंकि वे दोनों अचानक नाश ढाह देंगे उन पर; और कौन जानता है कितनी भयानक विपत्तियाँ वे भेज दें।

23

גַּם־	אֵלֶּה	לַחֲכָמִים	הַכֵּר־	פָּנִים	בְּמִשְׁפָּט	בַּל־	טוֹב׃
भी-	ये	बुद्धिमानों-के-लिए	पहचानना-	मुखों-को	न्याय-में	नहीं–	अच्छा
H1571	H0428	H2450		H6440	H4941	H1077	

ये सुक्तियाँ भी बुद्धिमान जनों की है: न्याय में पक्षपात करना उचित नहीं है।

24

אֹמֵר ׀	לְרָשָׁע	צַדִּיק	אָתָּה	יִקְּבֻהוּ	עַמִּים	יִזְעָמוּהוּ	לְאֻמִּים׃
कहनेवाला	दुष्ट-को	धर्मी	तू	शाप-देंगे-उसे	लोग	घृणा-करेंगे-उसे	जातियां
H0559	H7563	H6662				H2194	H3816

ऐसा जन जो अपराधी से कहता है, “तू निरपराध है” लोग उसे कोसेंगे और जातियाँ त्याग देंगी।

25

וְלַמּוֹכִיחִים	יִנְעָם	וַעֲלֵיהֶם	תָּבוֹא	בִרְכַּת־	טוֹב׃
और-डांटनेवालों-के-लिए	आनंद	और-उन-पर	आएगी	आशीर्वाद–	भलाई-की
H3198	H5276		H0935	H1293	

किन्तु जो अपराधी को दण्ड देंगे, सभी जन उनसे हर्षित रहेंगे और उनपर आर्शीवाद की वर्षा होगी।

26

שְׂפָתַיִם	יִשָּׁק	מֵשִׁיב	דְּבָרִים	נְכֹחִים׃
होंठों-को	चूमता-है	लौटानेवाला	बातें	सीधी
H8193		H7725	H1697	H5228

निर्मल उत्तर से मन प्रसन्न होता है, जैसे अधरों पर चुम्बन अंकित कर दे।

27

הָכֵן	בַּחוּץ ׀	מְלַאכְתֶּךָ	וְעַתְּדָהּ	בַּשָּׂדֶה	לָךְ	אַחַר	וּבָנִיתָ	בֵיתֶךָ׃	פ
तैयार-कर	बाहर	काम-अपना	और-तैयार-कर	खेत-में	अपने-लिए	बाद-में	और-बनाएगा	घर-अपना	प
	H2351	H4399	H6257				H1129		

पहले बाहर खेतों का काम पूरा कर लो इसके बाद में तुम अपना घर बनाओ।

28

אַל־	תְּהִי	עֵד־	חִנָּם	בְּרֵעֶךָ	וַהֲפִתִּיתָ	בִּשְׂפָתֶיךָ׃
मत–	हो	साक्षी-	बिना-कारण	पड़ोसी-अपने-के-विरुद्ध	और-बहकाना	होंठों-अपने-से
H0408	H1961	H5707	H2600	H7453		H8193

अपने पड़ोसी के विरुद्ध बिना किसी कारण साक्षी मत दो। अथवा तुम अपनी वाणी का किसी को छलने में मत प्रयोग करो।

לְאִישׁ	אָשִׁיב	לוֹ	אֶעֱשֶׂה־	כֵּן	לִי	עָשָׂה־	כַּאֲשֶׁר	תֹּאמַר	אַל־	29
मनुष्य-को	लौटाऊंगा-मैं	उसके-साथ	करूंगा-	वैसा	मेरे-साथ	किया-	जैसा	कह	मत-	
H0376	H7725							H0559	H0408	

כְּפָעֳלוֹ׃
कार्य-उसके-अनुसार
H6467

मत कहे ऐसा, “उसके साथ मैं भी ठीक वैसा ही करूँगा, मेरे साथ जैसा उसने किया है; मैं उसके साथ जैसे को तैसा करूँगा।”

לֵב׃	חֲסַר־	אָדָם	כֶּרֶם	וְעַל־	עָבַרְתִּי	עָצֵל	אִישׁ־	שְׂדֵה	עַל־	30
बुद्धि	बिना-समझ-	मनुष्य	दाख-बारी-के	और-पास-से-	गुजरा-मैं	आलसी-के	मनुष्य-	खेत-के	पास-से-	
H2638	H0120	H3754			H6102	H0376				

मैं आलसी के खेत से होते हुए गुजरा जो अंगूर के बाग के निकट था जो किसी ऐसे मनुष्य का था, जिसको उचित—अनुचित का बोध नहीं था।

אֲבָנָיו	וְגֶדֶר	חֲרֻלִּים	פָּנָיו	כָּסּוּ	קִמְשֹׁנִים	וְכֻלּוֹ	עָלָה	וְהִנֵּה	31
पत्थरों-की-उसकी	और-दीवार	बिछुआ-से	सतह-उसकी	ढक-गई	कांटे	सब-में	उग-आया-था	और-देखो	
H0068	H1444	H2738	H6440	H3680	H7063	H3605	H5927	H2009	

נֶהֱרָסָה׃
गिर-गई-थी
H2040

कंटीली झाड़ियाँ निकल आयीं थी हर कहीं खरपतवार से खेत ढक गया था। और बाड़ पत्थर की खंडहर हो रही थी।

מוּסָר׃	לָקַחְתִּי	רָאִיתִי	לִבִּי	אָשַׁתִּי	אָנֹכִי	וָאֶחֱזֶה	32
अनुशासन	लिया-मैंने	देखा-मैंने	हृदय-अपना	लगाया	मैं	और-देखा-मैंने	
H4148	H3947	H7200		H7896	H0595	H2372	

जो कुछ मैंने देखा, उस पर मन लगा कर सोचने लगा। जो कुछ मैंने देखा, उससे मुझको एक सीख मिली।

לִשְׁכָּב׃	יָדַיִם	חִבֻּק	וּמְעַט	תְּנוּמוֹת	מְעַט	שֵׁנוֹת	מְעַט	33
लेटने-के-लिए	हाथों-का	बांधना	थोड़ा	उंघाई	थोड़ी	नींद	थोड़ी	
H7901	H3027	H2264	H4592	H8572	H4592	H8142	H4592	

जरा एक झपकी, और थोड़ी सी नींद, थोड़ा सा सुस्ताना, धर कर हाथों पर हाथ। (दरिद्रता को बुलाना है)

פ	מָגֵן׃	כְּאִישׁ	וּמַחְסֹרֶיךָ	רֵישֶׁךָ	מִתְהַלֵּךְ	וּבָא־	34
प	ढालधारी	मनुष्य-जैसे	और-घाटा-तेरा	गरीबी-तेरी	चलती-हुई	और-आएगी-	
	H4043	H0376	H4270		H1980	H0935	

वह तुझ पर टूट पड़ेगी जैसे कोई लुटेरा टूट पड़ता है, और अभाव तुझ पर टूट पड़ेगा जैसे कोई शस्त्र धारी टूट पड़ता है।